सर्विस समाचार आना है तो सिर्फ देहली के म्युज़ियम का। और कहाँ म्युज़ियम बना नही है। (कलकत्ते) में बना न है, दूसरा जयपुर में है। जयपुर और देहली के सर्विस में रात–दिन का फर्क है। वहाँ एम.पी. आदि बड़े–2 लोग आते हैं। एम.पी. शायद देहली में है। देहली में म्युज़ियम के कारण सर्विस जास्ती है। देहली में कोशिश करते हैं; परन्तु ऐसी जगह मिलती नहीं है। जब तक रजोरी का फैसला न हो तब तक कहाँ म्युज़ियम बना न सके। कहाँ किराया पर मिल जाए तो अच्छा है। भक्तिमार्ग से ज्ञानमार्ग वालों को युद्ध करनी है तो सेना भी चाहिए। अभी तो क्वाटर परसेन्ट भी नहीं हैं। एक तरफ है सारी दुनिया, दूसरे तरफ तुम कितने थोड़े हो। प्रभाव तब निकलेंगे जब बच्चे जोर भरेंगे। बच्चों में सर्विस का जोर नहीं है। आज जोर भरता है, कल ठंडा हो जाता है। इसमें विघ्न भी पड़ते हैं। पवित्रता की बात पर झगड़ा चलता है। कलकत्ते में भी मकान नहीं मिलता। उनको भी ख्याल है यह घर फिटाती है। अभी घर तो फिटना ही है। स्त्री–पुरुष का झगड़ा, कन्याओं माँ का झगड़ा, बेटा बाप का झगड़ा। सिर्फ इसी बात पर। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। इनको जीतने से जगतजीत बनेंगे। वह तो यह ही घराणा है। अभी है भी बहुत सहज बात; पर किसकी बुद्धि में नहीं बैठता तो कहेंगे पत्थर बुद्धि हैं। जब तक ईश्वरीय बुद्धि बने, दैवी संस्कार हो, खान–पान शुद्ध हो। आजकल आदतें बहुत ही कड़ी होती हैं मनुष्यों में। बीड़ी–सिगरेट तो छोटे बच्चे के मुँह में देखेंगे। यहाँ तो सभी छोड़ना है। गायन है ना अंत काल जो स्त्री सिमरे... वह वल वल वैश्याएँ लम्पट। समझाना भी डिफीकल्ट लगता है। इसको कहा जाता है 100% पतित। नई दुनिया में है 100% पावन। इसमें साहस चाहिए। हठयोग की कितनी मेहनत करते हैं। वह भी इज़ी है। उनको माया रावण का सामना नहीं करना पड़ता है। तुमको तो सामना करना पड़ता है। बाबा रास्ता तो बहुत ही सहज बताते हैं। कहते हैं– बच्चे, अभी तमोप्रधन से सतोप्रधान बनना है। दैवीगुण भी चाहिए। शांति भी चाहिए। कोई क्रोध करे, ईविल बोले तो कान को पट्टी बाँध दो। इतनी ताकत कोई विरले में है। क्रोध वाले की शिकल जैसे टामी जैसे हो जाती है। क्रोध का भी भूत है। फिर मेहनत कराते–करते स्थापना तो ही हो जानी है। ऐसे भी हैं जो नर्क वा पुरानी दुनिया समझते ही नहीं हैं। इसलिए कहा था लिखो ऊपर में जो सृष्टि के चक्र को नहीं जानते हैं वह फर्स्ट क्लास ईडियट। कहाँ लिखते हैं, कहाँ भूल जाते हैं। माया भी प्रबल है। बाप भी कहते हैं मैं जब आता हूँ तो अपना परिचय देता हूँ। कहता हूँ मैं स्वर्ग की स्थापना करते(करने) आता हूँ। तो भी इस निश्चय में नहीं बैठ सकते। राजधानी को (देखा) जाता है तो ज़रूर ऐसे होगा। कोई आज्ञाकारी महारथी होंगे, कोई कम। ऐसी चलन होती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो तो मेहनत कर(नी) चाहिए ना। देह अभिमान न हो। तुम देह नहीं हो। अपन को आत्मा समझो, परमात्मा को याद करो। ..... मित्र–संबंधी होते भी परमपिता परमात्मा को याद करते हो। वह है परमआत्मा। उनका नाम सिर्फ शिव रखा हुआ है। अभी उनकी मत पर चलना है। उस आत्मा का नाम ही है शिव। बाबा आकर कितनी तकलीफों से छुड़ाते हैं। कितना फालतू खर्चा होता है। सभी पैसे खलास हो गए हैं। ज्ञान से आबादी ही होते हैं। पदमभाग्यशाली बनते हैं और सदा सुहागिन। स्त्री सदा सुहागिन तो पुरुष तो अंडरस्टुड ही हैं। वह तो है ही अमरपुरी में रहने वाले। काल पर जीत पाते हैं। वहाँ तो काल होता नहीं। रावण ही नहीं। तुम फूल बनने हो। फूलों की वैराइटी ज़रूर होती है। देहली में मोगल गार्डन मशहूर है। तुम हो अहिंसक। योगबल से अहिंसा परमोधर्म की स्थापना करते हो। यह सभी हिंसा करते हैं, विकार में जाते हैं। वह अहिंसक हैं। विकार में नहीं जाते। बच्चों को तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है। बाबा भी समझ सकते हैं। इस समय देहली में म्युज़ियम में सबसे जास्ती सर्विस है। इसलिए बाबा कहते हैं और भी खोलो तो बहुत आवेंगे। अखबार मत पर भी बहुत चल पड़ते हैं। फिर एक–एक से मेहनत करनी पड़ती है। तब ही बुद्धि ठीक होती है। तुम कितने थोड़े हो और जीत पाते हो। बाकी सभी विनाश हो जाते हैं। तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। मिरवा मौत मलुका शिकार। तुम कब हिलते नहीं हो। डर की बात भी नहीं। अच्छा, गुडनाइट। ओमशांति।